International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-01-2020; Accepted: 28-02-2020; Published: 10-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 29-30

पहाड़ी लोक नाट्य में रामायण

डॉ. सपना चन्देल
यू.जी.सी.–पी.डी.एफ. संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

'ख्याल' शब्द गीत–संगीत प्रधान, गेय, नाट्यों के लिए परम्परा से प्रयुक्त होता रहा है। इस परम्परा का सम्बन्ध गाथा–गायन से है। इसमें काव्य और संगीत पक्ष प्राधान्य रहता है, अभिनय–मुद्राएँ गौण हो जाती हैं। हारें, बरलाज, बुड़ासिंह, भारथ आदि प्रमुख लोक नाट्य विधाएँ मूलतः, 'पहाड़ी ख्याल' ही हैं।[1]

हिमाचली, गेय–नाट्य परम्परा में बरलाज अद्वितीय है। गीत–संगीत और अभिनय सभी दृष्टियों से यह परम्परा पर्याप्त समृद्ध एवं लोकप्रिय है।[2] हिमाचल प्रदेश में बरलाज के दो विभिन्न रूप प्रचलित हैं।[3] प्रथम बरलाज, बलि राजा के पौराणिक प्रसंगों से सम्बद्ध होकर एक प्रसिद्ध लोकगाथा के रूप में प्रचलित है। दूसरे रूप में बरलाज गेय–नाट्य रूप में प्रचलित है जिसमें रामायण से सम्बद्ध प्रसंगों का गायन–अभिनय समाहित है।[4]

हिमाचल के शिमला, सिरमौर, सोलन तथा कुल्लू जिलों के अनेक क्षेत्रों में प्रमुखतः कार्तिक मास में दीवाली त्यौहार के आस–पास हल्की सर्द रातों में बरलाज के आयोजन होते हैं।[5] दीवाली के आस–पास विभिन्न देवताओं के मन्दिरों में दिन को मेले लगते हैं। रात को मन्दिर के सामने खुले मैदान में लकड़ियों के ढेर लगाकर गीठा या धियाना (अलाव) जलाया जाता है। इसे पवित्र माना जाता है। खेल आरम्भ होते ही सबसे पहले इसके चारों ओर देवता के वाद्य–यंत्रों की धुनों की परिक्रमा की जाती है। देवता के चेला (गूर) को खेल आती है और वह मंत्रोच्चारण के साथ दर्शकों में चावल के दाने बाँटता है और खेल का शुभारंभ करता है। देवता के नाम पर स्थानीय भाषा में मंगलाचरण प्रस्तुत किया जाता है। तब रामायण के अनेक प्रसंग प्रस्तुत किए जाते हैं। हनुमान से सम्बन्धित दृश्य को हणु, लक्ष्मण के सम्बन्धित संदर्भ को जति, सीता के प्रसंग को सिया कहते हैं। दो या तीन कलाकार स्थानीय भाषा में केवल प्रसंग गाकर प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने ऊन का अचकननुमा कोट पहना होता है, तंग मोहरी का पाजामा और सिर पर पगड़ी। प्रत्येक के पास एक बल्लभ होता है जिसके ऊपरी भाग में धातु मढ़ी होती है। उसे कलाकार दायीं बगल के नीचे दबा कर दूसरे सिरे को भूमि पर टिका देता है। बल्लभ पर टिके दायें हाथ पर सिर को टिका देता है और खंजरी, डमरू और भाली के संगीत में पद्य रूप में बरलाज प्रस्तुत करता है। दूसरे कलाकार गीठे के गिर्द नाचते–कूदते हुए उसी प्रसंग का अभिनय करते हैं, परन्तु मुँह से कुछ नहीं कहते।[6]

बरलाज में रामायण के सभी प्रसंगों– रामजन्म से सीता की अग्नि परीक्षा तक को लोक–छन्दों में गाया जाता है और कलाकार नाचते हुए उन भावों के अनुकूल भावाभिनय प्रस्तुत करते हैं। पहाड़ी लोकरामायणकारों ने अपनी सूझ–बूझ और स्थानीय रंग देने के उद्देश्य से रामायण में ख्यात पौराणिक प्रसंगों के अलावा अनेक प्रसंगों की मौलिक उद्भावनाएँ की हैं जो विचित्र लगते हुए भी मनोरंजक है।[7]

'जति' और 'सिया' दृश्यों में गायन के साथ नृत्याभिनय भी किया जाता है। 'हणु' दृश्य में भाग लेने वाले सारे कलाकार हनुमान का मुखौटा पहनकर तीव्र गति से बजते संगीत के साथ उछल–कूद करते हैं और लंका दहन का सजीव दृश्य उपस्थित कर देते हैं। इस अंश में प्रस्तुत अभिनय प्रतीकात्मक अधिक होता है।

बरलाज में प्रस्तुत 'सीताहरण' का एक दृश्य प्रस्तुत है–

रामे होटा हेड़ो कै देई लखने कारो,
लंका दा रावण आया सीया नीही हारो।
रामो आये हेड़े दे आये पाई सीया शोधी,
मुखोगे चिन्ता पोड़ी केरी लखनी बोधी।
सीया छाड़यो लखन जती भी साथ आवा,
कोने नी मेरे को हेणे नाये कोरा बतावा।
जोदे जोंदे सीया के रामो पोड़ी काबली,
जूट पाँछी भेठा रामो के धारों गाये कंडयाली।
पाँछीये सीयारा पता रामो के दिता,
रावणो साथ हारो चाली सिया ओरे पिता।
राम रे जीयो के पोड़ी दाणीक चेनों,
लखनो तुझे बेगी करो लंका के निहों,
सगरी बारी गोईलो लागो मीतो रामोरी,
चीड़ा पोड़ास फौजोरा जोधोरे कामोरी।[8]

प्रदेश के विभिन्न भागों में बरलाज क्रमशः रमैण, रथौल और छोकड़ा इन तीन भागों में प्रस्तुत किया जाता है। छोकड़ा अथवा छुइकड़ा से अभिप्राय छलाँगें मारना और इसे हणु कहा जाता है। थोड़ा परिवर्तित रूप मान सकते हैं। रमैण और रथौल गायन की एक विशिष्ट पद्धति परम्परा से प्रचलित है। रमैण में एक दल जो पद गाता है, दूसरा दल उसी को दोहराता चला जाता है। रथौल में एक प्रसंग गाता है और दूसरा 'भले जी', 'बोली जी' कहकर उसका समर्थन करता है। 'छोकड़ा' में भी प्रथम दल पंक्ति को दूसरा दल दोहराता है।[9]

पूरी रात बरलाज का कार्यक्रम जारी रहता है। आयोजन समाप्ति से पूर्व देवता का गूर फिर खेलता है। मंडली के मुखिया उनसे बरलाज आयोजन का समापन करने की आज्ञा माँगते हैं, जिसे गूर सांकेतिक भाषा में दे देता है और आयोजन का समापन हो जाता है।

अस्तु, बरलाज में रामायण के अनेक प्रसंगों का गायन–अभिनय देखने को मिलता है।[10]

लीला–नाट्य

लीला–नाट्य में रामलीला और रास–लीला नाट्य सम्मिलित है। पहाड़ों में रामलीला मैदानों की रामलीला से भिन्न नहीं होती। दशहरे से पूर्व के दस–पन्द्रह दिन रामलीला के प्रमुख दिन होते हैं।[11] आजकल इनके लिए नियमित रूप से मंच बनते हैं। इनमें श्री रामचन्द्र के जन्म से लेकर रावण वध तक कथा प्रदर्शित होती है, जिसे लोक–रामायण कहते हैं।[12] हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में रामलीलाएँ होती हैं जो लोगों के धार्मिक पक्ष सुदृढ़ करती है क्योंकि इन लीला नाट्यों का आधार धार्मिक ग्रन्थ व धार्मिकता है।

लव–कुश लीला

चम्बा जनपद में लोकधर्मी लीलाओं की परम्पराओं में लव–कुश लीला का भी सूत्रपात हुआ माना जाता है। चम्बा में प्रचलित 'लव–कुश लीला' नाट्य परम्परा मात्र मात्र तीस वर्ष पुरानी है।[13]

चम्बा में स्थानीय रामलीला में राम जन्म से लेकर राम राजतिलक तक की कथा का लीलाभिनय होता है। इसके अगले भाग की रामकथा को यथा सीता वनवास, लव–कुश जन्म, अश्वमेघ यज्ञ, राम–लव–कुश युद्ध, राम–पुत्र मिलन और सीता माता का धरती में समा जाना आदि प्रसंगों का अभिनय लव–कुश लीला नाट्य में करके रामकथा को पूरा किया जाता है।[14] इस लीला नाट्य की भाषा हिन्दी मिश्रित चम्बयाली होती है। पुरुष कलाकार ही इस लीला में अभिनय करते हैं।[15]

लवकुश लीला नाट्य वाल्मीकि दिवस से एक सप्ताह पूर्व आरम्भ होकर ठीक वाल्मीकि दिवस की रात्रि को समाप्त होता है। एक सप्ताह की अवधि में इस नाट्य को पूरा करने के उद्देश्य से प्रत्येक रात्रि में चार–पाँच घण्टे तकम इसके प्रदर्शन आयोजित होते हैं।[16] लीला आरम्भ होने से पूर्व मंडली का मुखिया मंच पर आकर उस रात्रि अभिनित होने वाले प्रसंग की सूचना देता है, लीला का समापन आरती से होता है।[17]

हरणात्तर

लोकधर्मी स्वांग नाट्य परम्पराओं में हरणात्तर चम्बा का सर्वाधिक प्रिय नाट्य है और

जिले के सभी भागों में इसका प्रचलन है।[18] विद्वानों का एक वर्ग 'हरणात्तर' को रामकथा के पौराणिक आख्यान सीता–हरण से जुड़ा मानते हैं। इनके मतानुसार अनार्य रावण ने आर्य राम से अपनी पुरानी शत्रुता का बदला लेने के लिए स्वर्ग–मृग के ब्याज से सीता–हरण किया।[19]

संदर्भ सूची

1. हिमाचली लोक रंग, पृ. 113
2. वही, पृ. 113
3. पहाड़ी संस्कृति मंजूषा, पृ. 107
4. हिमाचली लोक रंग, पृ. 113
5. वही, पृ. 113
6. पहाड़ी संस्कृति मंजूषा, पृ. 107
7. हिमाचली लोक रंग, पृ. 114
8. वही, पृ. 115
9. वही, पृ. 115
10. वही, पृ. 116
11. पहाड़ी संस्कृति मंजूषा, पृ. 108
12. वही, पृ. 108
13. हिमाचली लोकरंग, पृ. 43
14. वही, पृ. 34
15. वही, पृ. 35
16. वही, पृ. 35
17. वही, पृ. 35
18. वही, पृ. 62
19. वही, पृ. 63